शोधसार

भारतीय तत्वज्ञान के आधार पर “ब्रह्म”(परब्रह्म, परमेश्वर) अनंत है एवं इस सृष्टि में जन्म लेनेवाली चौरासी लक्ष योनियों में से, अनंत को जाननेकी चेष्टा करनेवाला - सर्व श्रेष्ठ प्राणी अर्थात आत्म साक्षात्कार का अधिकारी; ‘मनुष्य प्राणी’ है | किन्तु, सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी, सृष्टि के नियमों से बँधे हुए मनुष्य का जीवन सीमित होनेसे, प्रत्येक मनुष्य को, इस सृष्टि में घटित होनेवाली सारी घटनाओं का अनुभव होना संभव नहीं है | परंतु, प्रत्येक मनुष्य, उसे जन्मजात प्राप्त हुई बुद्धि, भावना, प्रेरणा आदि के माध्यम से प्राकृतिक घटनाओं का आकलन करनेका प्रयास करता है तथा इन घटनाओं के परिणामों की अभिव्यक्ति करता है; जिसे हम ‘मानवनिर्मिती’ या ‘कला’ कहते है | भारतीय धारणा के अनुसार, प्रत्येक ‘कला’ या ‘शास्त्र’ का हेतु “अंतिम लक्ष प्राप्ति” अर्थात ‘आत्मदर्शन’ है और प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति पृथक होने से, 64 कलाएँ तथा अनेक प्रकार के शास्त्र उपलब्ध है | दूसरे शब्दों में, भारतीय तत्वज्ञान में ‘आत्मदर्शन’ की प्राप्ति के मार्गों में ‘वैविध्य’ एवं ‘स्वातंत्र्य’ है; अतः किसी एक मार्ग का चयन करके मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचना है | इसी परिपेक्ष में शोधार्थी ने, शोध प्रबंध के पहले दो अध्याय में समीक्षा की है | प्रथम अध्याय में भारतीय धर्म, संस्कृति एवं कला का विस्तृत अध्ययन करके, विश्व कल्याणकारी सनातन धर्म के अंतर्गत ‘मानवधर्म’ एवं ‘स्वधर्म’ के प्रति तथा गरिमामयी भारतीय संस्कृति के प्रति समझ स्पष्ट हुई | इसी के साथ, भारतीय धर्म,संस्कृति तथा कला के सापेक्ष में; श्रेष्ठ (ललित)कला “संगीत” की उत्पत्ति, उदेश्य तथा उसके स्थान के बारे में जानकारी उपलब्ध हुई है | इस अध्ययन द्वारा शोधार्थी को, प्राग ऐतिहासिक काल से लेकर आज के आधुनिक संगीत तक के विकास दरमियान संगीत में हुए बदलाव अर्थात ‘वैदिक समूह गान’ से लेकर मार्गी-देशी संगीत, जाती गान, प्रबंध गान, ध्रुपद, तथा ख्याल गायन इत्यादि के बारे में तथा भिन्न भिन्न शासकों के काल में हुए बदलाव तथा उसके परिणाम स्वरूप भारतीय सात्विक संगीत को हुई हानी के विषय में जानकारी प्राप्त हुई | भारतीय संगीत की खोयी हुई सात्विकता एवं आदर वापस लाने के लिए

भातखंडे जी तथा पलूसकर जी ने दिया हुआ अभूतपूर्व योगदान इस जानकारी को परिवर्धित करता है |

द्वितीय अध्याय में, आत्म साक्षात्कार के अनेक मार्गों में से 'अध्यात्ममार्ग' तथा 'भक्तिमार्ग' के विषय में विवरण प्राप्त हुआ है | आम जनता को केंद्र में रखकर उनके उद्धार हेतु, सर्व श्रेष्ठ 'भक्तिमार्ग' की व्याप्ति का ब्योरा प्राप्त हुआ है तथा 'भक्ति' एवं 'अध्यात्म' दोनों मार्गों में निहित "संगीत" की गवाही मिली है और साथ साथ 'भक्ति संगीत' की महत्ता सिद्ध हुई है |

अतः दोनों अध्यायों से प्राप्त माहिती संक्षेप में

- विश्वकल्याणकारी 'सनातन धर्म' का प्रयोजन केवल और केवल 'मानवधर्म' या 'स्वधर्म' से है, जिसका कोई संप्रदाय से कतई संबंध नहीं |
- गरिमामयी भारतीय संस्कृति में 'कला' का स्थान अग्रवर्ती है तथा ललित कलाओं में से एक, वेदकालीन 'भारतीय संगीत' का स्थान श्रेष्ठतर है |
- परिवर्तन को अटल मानते हुए तथा अनेक विदेशी आक्रमणों के कारण; वैदिक सामगान से शुरू हुए 'भारतीय संगीत' में समयोचित एवं परिस्थितीनुरूप बदलाव देखे गए है |
- यज्ञादी के अवसर पर एवं मंदिरों में गाएँ जानेवाले पवित्र 'भारतीय संगीत' का, कालानुरूप एवं परिस्थितीनुसार; विलासिता, मनोरंजन एवं व्यवसाय तरफ झुकाव के कारण हुआ ह्रास तथा इस विस्थापित संगीत के पुनःस्थापन हेतु भातखंडे एवं पलूसकरजी के साथ साथ अनेक विद्वानों द्वारा किये गए प्रयास के विवरण प्राप्त हुए है |
- इसी बदलाव के परिणाम स्वरूप, वैदिक समूह गान(सामगान) – गंधर्व गान – जातिगान – प्रबंध गान – ध्रुपद गान(बानियाँ) – आधुनिक ख्याल गान(घराने) की श्रृंखला में से एक एक पद्धति का लोप होकर, आज के काल में अधिकतर 'ख्याल' गायन प्रचलित रहा है |

- संगीत के साथ साथ, तत्कालीन स्थिति के कारण विस्थापित एवं भ्रमित सामान्य जनता के मनमे आत्मविश्वास निर्माण करके उन्हे अंतिम लक्ष्य तरफ़ मोड़ने के लिए, भारतीय संतों का अपूर्व योगदान स्पष्ट होता है |
- ईश्वर प्राप्ति के अनेक मार्गों की तुलना में, 'भक्तिमार्ग' की सुगमता-सरलता को दर्शाने के लिए, आँठवी सदी से शुरू हुए भक्ति आंदोलन का; देश के सभी संतों ने किया हुआ प्रचार प्रसार एवं कोई भी जाँति धर्म के भेद बिना, समाज के प्रत्येक स्तर के लोगोंको भक्ति की निर्मल धारा से अवगत कराने के लोकोद्धारक कार्य की साक्ष मिलती है |
- संतों ने लोकभाषा में रचित अपने साहित्य में "संगीत" को जोड़कर, अशांत प्रजा को 'असीम शांति' एवं 'आनंद' का अहसास दिलाकर भगवद भक्ति में समर्पित करानेके उल्लेख स्पष्ट होते है |

अतः प्रथम दो अध्यायों के आधार पर शोधार्थी ने बहुआयामी भारतीय संगीत के "भक्तिसंगीत" पर प्रकाश डालकर उसकी महत्ता को उजागर किया है |

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में, शास्त्रीय संगीत के साथ साथ भक्ति संगीत में प्रीति रखनेवाले एवं अपनी शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में 'राग' प्रस्तुतिकरण के उपरांत 'भक्तिसंगीत' प्रस्तुत करनेवाले कई शास्त्रीय संगीत गायकों से तथा शोधार्थी द्वारा चुने हुए प्रमुख सात कलाकारों के शिष्यों से बातचीत करके एवं TV, YouTube एवं अन्य सोशयल मीडिया में उपलब्ध साक्षात्कार तथा पुस्तकों आदि माध्यमों से; विषय के अनुलक्ष में जानकारी संग्रहीत की है | शोधार्थी द्वारा चयनित, शास्त्रीय संगीत के प्रति परम आस्थावान, ईश्वर के प्रति सश्रद्ध तथा संतों के प्रति आदर एवं उनके साहित्य के अनुरागी सभी प्रमुख कलाकारों के विषय में प्राप्त माहिती का संक्षेप में विवरण दिया है |

1. पंडित भीमसेन जोशी

- भक्तिभाव से ओतप्रोत कर्नाटक की प्रथा अनुसार, पंडित जी के बाल्यकाल से ही उनकी माता द्वारा गाएँ भजन को वे प्रेमपूर्वक सुनते रहने की माहिती से ; पंडित जी के ऊपर बचपन से ही भक्ति संगीत के संस्कार दिखाई पड़ते है |
- पंडित जी के कौटुंबिक-आध्यात्मिक गुरु, श्री राघवेंद्र स्वामीजी से उन्हे आशीर्वाद प्राप्त होने के साथ साथ एक समय काल में, उनके मठ में सेवा देनेके विवरण से पंडित जी के ऊपर 'गुरु भक्ति' के संस्कार के बारे में स्पष्टता होती है |
- पंडित जी के गुरु सवाई गंधर्व जी, प्रत्येक गुरुवार को भजन संध्या रखते थे; अतः सांगीतिक गुरु परंपरा से 'भक्ति संगीत' के संस्कारों की जानकारी प्राप्त होती है |
- गाँव में रहनेवाली-देहाती जनता संगीत का आनंद उठा सके इस हेतु से, पंडित जी ने शुरू किया हुआ केवल संत रचनाओं के गायन का (भक्ति संगीत का) 'संतवाणी' कार्यक्रम अत्यधिक यशस्वी होकर पंडित जी को लोकप्रियता दिलाने के प्रमाण मिलते है |
- पंडित जी की भक्तिभाव पूर्ण भजन एवं अभंग की प्रस्तुति से, अनेक लोगों को भगवान के दर्शन होने के प्रमाण स्पष्ट होते है |

2. पंडित कुमार गंधर्व

- कुमार जी, शास्त्रीय संगीत में रुचि रखनेवाले होने के बावजूद, क्षय रोग से अस्वस्थ होनेपर; देवास में नाथपंथी कनफटे साधुओं ने गाए हुए निर्गुणी भजन की तरफ आकर्षित होकर उन निर्गुणी भजनों को आत्मसात करके; स्वस्थ होनेपर अपनी गायकी को नूतन रूप में प्रस्तुत करनेके प्रमाण स्पष्ट होते है |

- अनेक निर्गुणी भजनों को स्वरबद्ध करके, उन भजनों के 'आत्मनिर्भर', 'बेफ़िकर' फकीर के भाव को स्पष्ट कनेवाली शैली में गाकर; उन्हे लोकप्रिय बनाने का ब्योरा मिलता है |
- कुमार जी के निर्गुणी भजन सही रूप से निर्गुणी होकर, श्रोताओं के मनः चक्षु पर कोई भी आकृति न बनते हुए केवल असीम शांति की अनुभूति होने की माहिती विशद होती है |

3. पंडित जितेंद्र अभिषेकी

- पंडित जी के परदादा से उनके पिता तक, तीन पीढ़ियों ने, गोवा के प्रसिद्ध मंगेशी मंदिर में पौरिहित्य करने से; बाल्यकाल से पंडित जी के ऊपर ईश्वर पूजा एवं भक्ति के संस्कार दिखाई पड़ते है |
- पंडित जी के पिता 'बालूबुवा' कीर्तनकार होने के कारण, उनके साथ मंजीरे की संगत करने वाले पंडित जी के ऊपर; संत साहित्य एवं भक्ति संगीत के संस्कार बचपन से होने लगे थे|
- पंडित जी की हवेली मंगेशी मंदिर के बगल में होने से, मंदिर में बजनेवाले प्रातःकालीन 'चौघड़े' के प्रति बचपन से आकर्षित होनेवाले अभिषेकी जी के बाल मानस पर, मंदिर के भक्तिमय वातावरण के एवं भक्ति संगीत के संस्कार दिखाई पड़ते है |
- संतों द्वारा उनकी उच्च ध्यानात्मक अवस्था में हुई साहित्य निर्मिती को, अनुकूल भाव एवं शब्दोंच्चार में गाना आवश्यक है; यह मानने वाले अभिषेकी जी ने अनेक रचनाओं को स्वरबद्ध करके, कई रचना ओं का गायन करने का विवरण मिलता है |
- पंडित जी की नजर में, रागदारी संगीत में आनेवाला 'ईश्वर के शृंगार का वर्णन' भी उसकी लीला के रूप में 'भक्तिभाव' का द्योतक होने के प्रमाण स्पष्ट होते है |

4. पंडित जसराज

- “सुरों को प्यार करके भगवान के लिए गाना”, इस उक्ति पर आधारित मेवाती घराना अत्यंत भक्तिरस पूर्ण होने के उल्लेख मिलते है |
- मेवाती घराने की उक्ति को साकार करनेवाले जसराज जी, आध्यात्मिक गुरु ‘साणंद बापू’ द्वारा आई हुई अनुभूति एवं ‘स्वामी वल्लभदास’ के प्रभाव के कारण भगवान के प्रति अत्याधिक लीन होने के प्रमाण स्पष्ट होते है |
- भक्तिरस प्रधान मेवाती घराने के श्रेष्ठ कलाकार के रूप में जसराज जी ने ‘हवेली संगीत’ के साथ अनेक स्तोत्र, मंत्र, धुन आदि भक्तिपूर्ण प्रकारों का गायन करके लोगों के हृदय में स्थान बनाने के विषय में माहिती विशद होती है |
- कृष्ण भक्ति में डूबे हुए जसराज जी के साथ साथ उनके शिष्यों को भी मंच प्रदर्शन दरमियान, भगवान कृष्ण के संबंध में महसूस हुई अनेक अनुभूतियों के तथा श्रोताओ के मंत्रमुग्ध होनेके उल्लेख मिलते है |
- भगवान कृष्ण में असीम श्रद्धा रखनेवाले जसराज जी को, मंच प्रदर्शन दरमियान, तथा सपने मे आकर सांगीतिक मार्गदर्शन देनेवाले कृष्ण भगवान के, कई बार दर्शन होने के उल्लेख उजागर होते है |

5. गानसरस्वती किशोरी आमोणकर

- सुरों को सर्वस्व माननेवाली एवं ईश्वर में श्रद्धा रखनेवाली ताई, कुलदेव रवलनाथ एवं गुरु राघवेंद्र स्वामीजी के प्रति समर्पित रहकर जीवन में मिलनेवाली सफलता एवं यश को उन्हे अर्पण करने के प्रमाण स्पष्ट होते है |

- भारतीय संगीत के अंतर्गत, गहन स्वरसाधना के माध्यम से होनेवाली रागनिर्मिती से, प्रकट होनेवला भाव 'परम शांति' प्रदान करता है; अतः 'मोक्ष प्राप्ति के लिए भारतीय संगीत अत्यंत उपयुक्त' यह ताई का विधान स्पष्ट होता है |
- संत रचनाएँ तथा भजन के प्रति अनुराग रखकर, केवल संत रचनाओं पर आधारित लोकप्रिय कार्यक्रम करनेके एवं कई प्रिय संतों में से एक मीराबाई के साथ विशेष अपनापन महसूस करने के कारण; केवल मीराबाई के भजनों की प्रस्तुति का विशेष कार्यक्रम करनेकी माहिती विशद होती है |
- संत रचनाएँ या भजन को स्वरबद्ध करनेकी अपूर्व सिद्धि ताई को प्राप्त होने से; रचना के पात्र की भूमिका में जाकर, रचना के शब्द एवं भावानुरूप धुन अनायास बनने की माहिती विशद होती है |

6. डॉ वीणा सहस्त्रबुद्धे

- संगीत के प्रति सदैव समर्पित रहनेवाली, संगीत की भक्त वीणाताई के भजन के प्रस्तुतिकरण में भक्ति उभर आती थी; डॉ अश्विनी भिड़े – देशपांडे जी का वीणाताई के प्रति विधान स्पष्ट होता है |
- वीणाताई के भावपूर्ण भजन गानेपर, विशेषतः निरगुण भजन गानेपर; निर्गुण जैसी कठिन शब्दातीत अवस्था को श्रोताओं के मनःपटल अंकित करनेका सामर्थ्य वीणाताई में होने के उल्लेख मिलते है |
- रियाज करते समय वीणाताई का राम नाम लेकर स्वर लगाना तथा स्वरों पर श्रीराम के दर्शन करके अंतर्मुख होने की साक्ष मिलती है |

- कुमार गंधर्व जी के निर्गुणी भजन के ताई के ऊपर हुए संस्कार और विशेष रूप से कबीर साहित्य के प्रगाढ़ अध्ययन के आधार पर; निर्गुणी कबीर भजन के शब्दानुरूप भाव में प्रस्तुतिकरण के उल्लेख विशद होते है |
- कन्नड भजनों के प्रति लगाव होने से, उन्हे सीखकर कर्नाटक के कुछ कार्यक्रमों में सफलता पूर्वक प्रस्तुतिकरण की माहिती मिलती है |

7. पंडित राजन साजन मिश्र

- काशी जैसी प्राचीन धार्मिक-आध्यात्मिक नगरी में जन्म तथा घर में पारंपरिक धार्मिक वातावरण के कारण राजन-साजन जी का श्रद्धा, भक्ति तथा अध्यात्म से ओतप्रोत विनयशील स्वभाव, वहाँ के संस्कारांतर्गत मंदिरों में 'हाजरी' देना, आदि की माहिती स्पष्ट होती है |
- सर्वदा एक दूसरे को पूरक बनके सहगान की आलापी दरमियान ई s s s के उच्चार के माध्यम से राजन जी की 'ईश्वर को पुकार' तथा स्वतः के साथ श्रोताओं को सम्मिलित करने के उल्लेख मिलते है |
- 'भजन' जैसी शब्द प्रधान गायकी से विशेष लगाव एवं महफ़िल में हुई गलतियों की माफी माँगने के हेतु से, महफ़िल के अंत में भजन गाने के की मानसिकता के प्रमाण स्पष्ट होते है|
- संगीत के प्रति समर्पण तथा अत्यंत भावपूर्ण एवं आर्त गायकी के कारण, कोई भी सांगीतिक प्रस्तुति 'भजन' बनने के उल्लेख विशद होते है |
- तुलसीदास, कबीर, गुरु नानक तथा स्वरचित भजनों के प्रस्तुतिकरण से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करना तथा स्वयं भावसमाधि में जाने के प्रमाण स्पष्ट रूप से दिखते है |

चतुर्थ अध्याय में शोधार्थी ने, सात श्रेष्ठ कलकरों ने गायी हुई अनेक भक्ति रचना में से एक एक रचना लेकर उसके 'शब्द' तथा 'नोटेशन' को नमूद करके उसका विश्लेषण किया है| इसिके साथ, उस प्रत्येक रचना को गानेवाले आज के युवा कलाकारों के माध्यम से उसकी

लोकप्रियता के आँकड़े एकत्रित किये है | तथा प्रत्येक श्रेष्ठ कलाकार द्वारा भक्तिसंगीत में दिये हुअे योगदान के सीडी या कॅसेट्व के रूप में हुए प्रकाशन के आँकड़े एकत्रित किये है|

इस प्रकार से, शोधार्थी ने, "स्वातंत्र्योंत्तर काल में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत गायकों का भक्तिसंगीत में योगदान – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस विषयान्तर्गत अध्ययन से प्राप्त हुए तथ्यों को उजागर करनेका प्रयास किया है |